पाठ 4. अपराजिता

पाठ का उद्देश्य

प्रस्तुत पाठ का उद्देश्य बच्चों को अदम्य साहस की धनी डॉ॰ चंद्रा के व्यक्तित्व से परिचित करवाते हुए यह समझाना है कि जीवन के दूसरे क्षण में क्या हो जाए यह निश्चित नहीं है परंतु एक चीज़ निश्चित है कि जीवन चलता रहता है, रुकता नहीं। अत: स्थितियाँ कैसी भी हों, हमें साहस का साथ नहीं छोड़ना चाहिए।

पाठ का सारांश

जब लेखिका का परिचय चंद्रा से हुआ तो वह दंग रह गईं। चंद्रा शारीरिक रूप से अपंग थी। परंतु वह अपने सारे काम बड़ी दक्षता से करती थी। चंद्रा के साथ-साथ उसकी माँ शारदा सुब्रह्मण्यम ने भी अपनी बेटी के लिए बहुत संघर्ष किया। चंद्रा ने स्कूल की प्रत्येक परीक्षा तथा एम॰एस॰सी॰ में प्रथम स्थान प्राप्त किया। उन्होंने इंस्टीट्यूट ऑफ़ साइंस में पाँच वर्ष तक शोधकार्य किया तथा डॉक्टरेट की डिग्री ग्रहण की। डॉ॰ चंद्रा शारीरिक रूप से अक्षम स्त्री-पुरुषों में पहली भारतीय हैं जिन्हें माइक्रोबायोलॉजी के क्षेत्र में डॉक्टरेट की उपाधि मिली। नियति के प्रत्येक कठोर आघात को झेलते हुए डॉ॰ चंद्रा ने सभी के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया है कि जीवन में आने वाली हर चुनौती का साहस के साथ मुकाबला करना चाहिए।

अध्यापन संकेत

बच्चों से **पठन-पूर्व चर्चा** के अंतर्गत दिए गए प्रश्न पूछें। उनसे पाठ का अंशों में वाचन करवाएँ। पाठ के महत्त्वपूर्ण बिंदुओं या अंशों का सरलीकरण करके समझाएँ।

शारीरिक रूप से अक्षम साहसी बच्चों/व्यक्तियों के विषय में बच्चों को बतलाएँ कि वे अपने जीवन को एक चुनौती के रूप में स्वीकार करते हैं।

पाठ से संबंधित कुछ विशेष बातों पर बच्चों से विचार-विमर्श करें–

- पोलियो उन्मूलन के लिए सरकार द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों के बारे में बच्चों से बातचीत करें।
- किसी व्यक्ति की शारीरिक अक्षमता उसके लिए कब बाधा बन जाती है–जब वह स्वयं ही अपने को दूसरों से कम आँकने लगता है तब? या फिर तब, जब समाज उसे बढ़ने नहीं देता?

डिजिटल (Digital) के माध्यम से पाठ की ई-बुक विद्यार्थियों को दिखाकर पाठ के प्रत्येक अंग का स्पष्टीकरण कीजिए। गतिविधियों की दुनिया से परिचय भी कराइए।